

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ चतुर्थः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ चतुर्थः सर्गः ॥

हनुमतो लङ्कायां रारणस्यान्तःपुरे च प्रवेशः

स निर्जित्य पुरीं लङ्कां श्रेष्ठां तां कामरूपिणीम्।
रिक्त्रमेण महातेजा हनुमान् कपिसन्तमः ॥ 5.4.1 ॥

अदरारेण महारीर्यः प्राकारमरपुष्पुरे।
निशि लङ्कां महासत्रो रिरेष कपिकुञ्जरः ॥ 5.4.2 ॥

प्ररिश्य नगरीं लङ्कां कपिराजहितकरः।
चक्रेहथ पादं सर्यं च शत्रुणां स तु मूर्धनि ॥ 5.4.3 ॥

प्ररिष्टः सत्रसम्पन्नो निशायां मारुतात्त्वजः।
स महापथमास्थाय मुक्तपुष्परिराजितम् ॥ 5.4.4 ॥

ततस्तु तां पुरीं लङ्कां रम्यामभिययौ कपिः।
हसितोत्कृष्टनिनदैस्तूर्यघोषपुरस्कृतैः ॥ 5.4.5 ॥

रज्राकुशनिकाशैश्च रज्रजालरिडुषितैः।
गृहमेधैः पुरी रम्या वभासे द्यौरिराशुदैः ॥ 5.4.6 ॥

प्रजज्ज्वाल तदा लङ्का रक्कोगणगृहैः शुडैः।
सिताद्रसदृशैश्चित्तैः पद्मस्त्रस्तिकसंस्थितैः ॥ 5.4.7 ॥

रर्धमानगृहैश्चापि सरतः सुरिडुषितैः।
तां चित्रमाल्याभरणां कपिराजहितकरः ॥ 5.4.8 ॥

রাঘরার্থে চরন্ শ্রীমান্ দদর্শ চ ননন্দ চ।
ভরনাদ্ ভরনং গচ্ছন্ দদর্শ কপিকুঞ্জরঃ ॥ 5.4.9 ॥

বিরিধাকৃতিরূপাণি ভরনানি ততস্ততঃ।
শুশ্রার রুচিরং গীতং ত্রিস্থানস্বরভূষিতম্ ॥ 5.4.10 ॥

স্ত্রীণাং মদনরিদ্ধানাং দিবি চান্সরসামিবি।
শুশ্রার কাঞ্চীনিদং নূপুরাণাং চ নিঃস্বরনম্ ॥ 5.4.11 ॥

সোপাননিদাংশচাপি ভরনেষু মহাত্মনাম্।
আস্ফাটিনিনাদাংশ্চ ক্ষুরেডিতাংশ্চ ততস্ততঃ ॥ 5.4.12 ॥

শুশ্রার জপতাং তত্র মন্ত্রান্ রক্ষোগৃহেষু বৈ।
স্বাধ্যায়নিরতাংশৈচর যাতুধানান্ দদর্শ সঃ ॥ 5.4.13 ॥

রারণস্বরসংযুক্তান্ গর্জতো রাক্ষসানপি।
রাজমার্গং সমাবৃত্য স্থিতং রক্ষোগণং মহৎ ॥ 5.4.14 ॥

দদর্শ মধ্যমে গুল্মে রাক্ষসস্য চরান্ বহুন্।
দীক্ষিতান্ জটিলান্ মুণ্ডান্ গৌজিনাম্বররাসসঃ ॥ 5.4.15 ॥

দর্ভমুষ্টিপ্রহরণান্নিকুণ্ডায়ুধাংস্তথা।
কূটমুদগরপাণীংশ্চ দণ্ডায়ুধধরানপি ॥ 5.4.16 ॥

একাক্ষানেকরণাংশ্চ লম্বোদরপযোধরান্।
করালান্ ভুগ্নরক্তাংশ্চ রিকটান্ রামনাংস্তথা ॥ 5.4.17 ॥

ধন্বিনঃ খড়্গিনশ্চৈচর শতশ্লীমুসলাযুধান্।
পরিঘোত্তমহস্তাংশ্চ রিচিএকরচোজ্জ্বলান্ ॥ 5.4.18 ॥

নাতিশূলান্ নাতিকৃশান্ নাতিদীর্ঘাতিহ্রস্বরকান্।
নাতিগৌরান্ নাতিকৃষ্ণান্নাতিকুঞ্জান্ন রামনান্ ॥ 5.4.19 ॥

বিরূপান্ বহুরূপাংশ্চ সুরূপাংশ্চ সুরচসঃ।
ধ্বজিনঃ পতাকিনশ্চৈর দদর্শ বিরিধায়ুধান্ ॥ 5.4.20 ॥

শক্তিবৃক্ষায়ুধাংশ্চৈর পট্টিশাশনিধারিণঃ।
ক্ষেপণীপাশহস্তাংশ্চ দদর্শ স মহাকপিঃ ॥ 5.4.21 ॥

স্রগ্বিগনস্ত্রনুলিপ্তাংশ্চ বরাভরণভূষিতান্।
নানারেষসমায়ুক্তান্ যথাস্শৈররচরান্ বহুন্ ॥ 5.4.22 ॥

তীক্ষ্মশূলধরাংশ্চৈর বজ্রিণশ্চ মহাবলান্।
শতসাহস্রমর্যগ্রমারক্ষং মধ্যমং কপিঃ ॥ 5.4.23 ॥

রক্ষোহধিপতিনির্দিষ্টং দদর্শান্তঃ পুরাগ্রতঃ।
স তদা তদ্ গৃহং দৃষ্ট্বা মহাহটকতোরণম্ ॥ 5.4.24 ॥

রাক্ষসেন্দ্রস্য বিখ্যাতমদ্রিমূর্ধ্নি প্রতিষ্ঠিতম্।
পুণ্ডরীকারতংসাভিঃ পরিখাভিঃ সমারূতম্ ॥ 5.4.25 ॥

প্রাকারাবৃতমত্যন্তং দদর্শ স মহাকপিঃ।
ত্রিষ্টপনিভং দির্যং দির্যনাদরিনাদিতম্ ॥ 5.4.26 ॥

রাজিহ্নেষিতসঙ্ঘুষ্টং নাদিতং ভূষণৈস্তথা।
রথৈর্যানৈর্নিমানৈশ্চ তথা হযগজৈঃ শুভৈঃ ॥ 5.4.27 ॥

রারণৈশ্চ চতুর্দন্তৈঃ শ্বেতাভ্রনিচযোপমৈঃ।
ভূষিতৈ রুচিরদরারং মন্তৈশ্চ মৃগপক্ষিভিঃ ॥ 5.4.28 ॥

রক্ষিতং সুমহারীর্ষেয়াতুধানৈঃ সহস্রশঃ।
রাক্ষসাধিপতের্গুপ্তমারিবেশ গৃহং কপিঃ ॥ 5.4.29 ॥

স হেমজাম্বুনদচক্ররালং
মহার্হমুক্তামণিভূষিতান্তম্।

পরার্থকালাগুরুচন্দনাইং

স রারণান্তঃপুরমারি়েশ ॥ 5.4.30 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে রাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে সুন্দরকাণ্ডে চতুর্থঃ সর্গঃ ॥